

00000000 00000

जनसत्ता 14 अगस्त, 2014 : अधकित्तर आत्मकथा' या संस्मरण आत्मश्लाघा होते हैं जनिमें दुश्मनों से बदले भी लफि जाते हैं

रूसो या महात्मा गांधी अपवाद हैं जनिहोंने अपनी कमजोरथिों के सार्वजनिककरने क अद्भुत साहस दिखाया। फरि भी आत्मकथाओं और संस्मरणों में कुछ ऐतहासिकितथ्य तो दर्ज हो ही जाते हैं जनिसे सच्चाई सामने आती है और आगे के पीढ़ी के अतीत में झांके क अवसर मलिता हैं। इधर कई पुस्तकें आई हैं जनिमें यूपी सरकार और सोनिया गांधी के बारे में कई खुलासे कफि गफि हैं। इनमें दो पुस्तकें प्रमुख हैं- संजय बारू की 'द ऐक्सडिंटल प्राइम मनिस्ट्र' और कुंवर नटवर सहि की 'वन लाइफइज नॉट क नफ' कुछ और पुस्तकें प्रकश्य हैं जनिमें क कमनमोहन सहि की बेटी ने लिखी है और सोनिया गांधी ने घोषणा की है क वे भी आत्मकथा लिखेंगी। अगर वे ऐसा करती हैं तो यह स्वगतयोग्य होगा, क्योकि पछिले लगभग पचास वर्षों की महत्त्वपूर्ण घटनाओं की वे गवाह और कई वर्षों से संचालक हैं। उन्होंने देश की राजनीत को प्रभावति किया है।

संजय बारू और नटवर सहि ने जो खुलासे कफि हैं उनमें कुछ भी नया नहीं है। लेकिन अगर क गुप्त बात जो सर्ववदिति है, उसे कोई ऐसा व्यक्ति सार्वजनिककरता है जो उस व्यवस्था क क अंग रहा है तो वह प्रामाणिक हो जाती है। बारू और नटवर सहि ने सोनिया गांधी के त्याग के बारे में यही कथि है। 2004 में जब उन्होंने अंतरात्मा की आवाज पर प्रधानमंत्री बनने से मना कथि था तब भी लोगों ने इसे त्याग क आभासकही माना था, त्याग नहीं।

आज कोई राजनीतिकदल या नेता आलोचना बर्दाश्त नहीं करता। चापलूसों से घरे राजनेताओं की आंखों से सत्य ओझल हो जाता है और फरि उनकी वही दुर्दशा होती है जो कांग्रेस, द्रमुक, समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल या जद (क) की हुई। करारी हार के बाद भी कांग्रेस में क कपरिवार की वंदना करने की हो है और सोनिया की आलोचना के वरिद्ध कांग्रेस नेताओं की तीखी प्रतिक्रिया आई है। महान व्यक्ति वह होता है जो आत्मालोचना करे। आज तो कोई आलोचना सुनने के तैयार नहीं है।

जब 1957 क आम चुनाव हो रहा था तो उस समय संपूरणानंद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। 28 दिसंबर 1954 से 7 दिसंबर 1960 तक वे लगातार मुख्यमंत्री रहे। वे पहले सोशलसिस्ट पार्टी में थे। इसलफि आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकश नारायण आदि से उनके आत्मीय संबंध थे। 1957 के चुनाव में सोशलसिस्ट पार्टी क घोषणापत्र आचार्य नरेंद्र देव स्वयं बना रहे थे। उन्होंने यह जमिमेदारी संपूरणानंद को दी। घोषणापत्र बनाने क सीधा मतलब था क उन्हें अपनी ही सरकार की आलोचना करनी पती। पर उन्होंने लिखा और नरेंद्र देव को दे दिया। नरेंद्र देव ने उनसे कहा क वे पढ़ेंगे नहीं; उसे वे (संपूरणानंद) छपवा कर लाएं। फरि संपूरणानंद ने वह छपवा कर उन्हें सौपा। वह घोषणापत्र उनकी अपनी सरकार की सबसे कटु और वस्तुपरक आलोचना थी। वडिंबना यह है क आज हर आलोचना के वदिवेष से की गई वह कर खारजि करने क रविाज बन चुक है।

कुंवर नटवर सहि ने अपनी पुस्तक 'वन लाइफ इज नॉट १ नफ' में सोनिया गांधी के त्याग के 'ढकेसले' क प्रदाफश किया है कि ऐसा उन्होंने अंतरात्मा की आवाज पर नहीं, बल्कि राहुल गांधी के दबाव पर किया जिन्हें मां की हत्या की जाने की आशंका थी। मगर सोनिया ने त्याग क क आभामंडल अपने चारों ओर तैयार किया क्योंकि भारतीय मानस के सफलता से अधिक त्याग प्रभावित करता है। यह कोई त्याग नहीं था क्योंकि शासन की डोर उन्होंने अपने हाथ में रखी।

नटवर ने वही दोहराया है जो बारू ने लिखा है कि संवेदनशील फाइलें सोनिया गांधी के पास ले जाई जाती थीं। यह प्रधानमंत्री/ मंत्री द्वारा ली गई गोपनीयता की शपथ क उल्लंघन है। मनमोहन सहि ने इसका जोरदार खंडन किया है। नटवर सहि ने डीडी न्यूज पर इस लेखक के साथ क साक्षात्कार में कहा, 'तो मनमोहन सहि और कह क्या सकते हैं?'

यह हकीकत है कि सोनिया ने कभी सत्ता क परित्याग नहीं किया। अगर यह उनका त्याग था तो 1999 में संसद में वाजपेयी सरकार गरिने के बाद वे सरकार बनाने क दावा पेश नहीं करती कि उन्हें दो सौ बहत्तर सांसदों क समर्थन प्राप्त है। चूंकि मुलायम सहि यादव ने समर्थन देने से दो टूक इनकार क दिया, इसलिये वे सरकार नहीं बना पाए। 2004 में भी उन्होंने शुरु में पद लेने से इनकार नहीं किया था। जब उन्होंने मनमोहन सहि के प्रधानमंत्री बनाया तो राष्ट्रीय सलाहकार परिषद क गठन करवाया और उसके अध्यक्ष के रूप में कैबिनेट मंत्री क ओहदा प्राप्त किया।

परिषद के 'सुपर कैबिनेट' के रूप में जाना जाता था। यह सर्ववदिति है कि मनमोहन सहि सरकार के मंत्री उनके प्रति वफादारी क इजहार करते थे, प्रधानमंत्री के प्रति नहीं। त्याग करने वाले इस तरह की तर्कियों क सहारा नहीं लेते। मणशंकर अय्यर ने स्वीकार किया है कि राहुल क दबाव भी क कारण था। राहुल या सोनिया ने इसका प्रतिवाद नहीं किया है।

महात्मा गांधी और जयप्रकाश नारायण जैसे महापुरुषों ने सच्चे अर्थ में सत्ता क परित्याग किया और कभी रिमोट से उसे नयित्वात् नहीं किया। गांधीजी ने स्वाधीनता संग्राम क सफल नेतृत्व किया, मगर सत्ता प्राप्त होने पर अपने को उससे अलग क लिया। यह विश्व इतिहास क अनुपम उदाहरण है कि आंदोलन क सबसे बड़ा नेता उसकी सफल समाप्ति पर सत्ता की बागडोर अपने हाथ में नहीं लेता। लोकनायक जयप्रकाश नारायण महात्मा के पदचिह्नों पर चले। दादा धर्माधिकारी के मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री बनाने की पेशकश की गई जिसे उन्होंने ठुकरा दिया।

कृष्णदास जाजू चरखा संघ के प्रमुख थे। सरदार वल्लभभाई पटेल ने उन्हें वित्तमंत्री के रूप में केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने के कहा। जाजू ने मना करते हुए कहा कि इस काम के लिए बहुत व्यक्त मलि जागे, लेकिन चरखे के काम के लिए कोई नहीं मल्लिगा। पर नेहरू ने कभी कोई पद लेने से इनकार नहीं किया- चाहे पार्टी में या सरकार में। जब साहित्य अकादेमी की स्थापना हुई तो 1953 में वे उसके पहले अध्यक्ष बना। ग और इस पद पर भी जीवनपर्यंत बने रहे। अब सोनिया पंद्रह वर्षों से कांग्रेस अध्यक्ष हैं। उनके पहले किसी अध्यक्ष के इतना लंबा कार्यकाल नहीं मलि और इसे छोड़ने की फलिहाल उनकी कोई मंशा नहीं दिखती।

बहरहाल, नटवर सहि की पुस्तक के लेकर सवाल उठे हैं कि नजि बातचीत को सार्वजनिक करना कतिना नैतिक है। यह साफ है कि उन्होंने प्रतशिोध की भावना से पुस्तक लिखी है। पुस्तक से क छोटा अंश उद्धृत करना समीचीन होगा: 'वोल्कर रिपोर्ट में मेरा नाम आने के समय सोनिया क व्यवहार बुरा तथा वषिला था, और इससे मुझे तकलीफ हुई। ... जिस दिन से उन्होंने भारतीय भूमि पर पांव रखे हैं उनके साथ राजवंशी व्यवहार किया गया। ... बीते वर्षों में वह क संकेची, घबराई हुई, शर्मीली महिला से महत्त्वाकंक्षी, अधिनायकवादी और सख्त नेता बन गई है। उनकी नाखुशी कांग्रेसजनों के मन में भय पैदा करती है।'

यह सच है कि महान व्यक्ति नजि या विशेष सूचना का इस्तेमाल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं करते हैं। जेपी ने पत्नी प्रभावती के नाम कमला नेहरू के पत्रों को इंदिरा गांधी को वापस कर दिया था, जबकि इंदिरा गांधी से उनके मतभेद सार्वजनिक हो चुके थे। पंद्रह अप्रैल 1973 को प्रभावती की मौत के बाद प्रभा स्मृतिक प्रकाशन होने वाला था जिसके लिए उन पत्रों की बहुत जरूरत थी।

ये पत्र बहुत व्यक्तिगत थे जिनसे दोनों के आत्मीय संबंध की झलक मिलती थी। कोई भी पत्र चार पृष्ठ से कम का नहीं था। उनके प्रकाशन से नेहरू परिवार की छवि प्रभावित हो सकती थी। इसलिए जेपी को ऐसा करना उचित नहीं लगा और वे पत्र उन्होंने इंदिरा गांधी को वापस सौंप दिए। भावुक होकर इंदिरा ने कहा, 'आप अकेले ऐसा कर सकते थे' जो हो, सच को सामने लाना गलत नहीं है, पर बदले की भावना से प्रभावित होकर लिखने से आत्मगत तत्त्व हावी हो जाते हैं।

अभी सच बोलने की अचानक लगे लग गई है। संजय बारू से लेकर न्यायमूर्ति मारकंडेय कटजू और फिर नटवर सहि, सब के सब सत्य परोस रहे हैं जबकि यूपी की सत्ता से वदाई हो चुकी है। तत्कालीन रूप से बारू की पुस्तक पूर्ववर्ती सरकार के समय में ही आ चुकी थी, पर चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी और यह स्पष्ट हो चुका था कि वह सरकार वापस नहीं आ रही है।

इन खुलासों के समय के बारे में सवाल उठ रहे हैं। हालांकि कटजू का वलिंब से हुआ हृदय परिवर्तन अवसरवाद का उदाहरण है, बारू और नटवर सहि के संशय का लाभ मलि सकता है। कटजू से जब भी कोई पत्रकार उनके खुलासे के समय को लेकर सवाल करता था तो वे भ्रम क उठते थे और कहते थे कि समय से अधिक महत्त्वपूर्ण है तथ्य। बाद में उन्होंने कलचर सफाई दी कि वे न्यायिक अनुशासन से बंधे थे। यह तर्क स्वीकार्य नहीं है क्योंकि मंत्रि की तरह न्यायाधीश गोपनीयता की शपथ नहीं लेता; जज के केवल पद की शपथ लेनी होती है। इसलिए किसी न्यायाधीश के लिए सच उजागर करना न्यायिक अनुशासन का किसी प्रकार उल्लंघन नहीं है। अगर वे सही समय पर खुलासा कर देते तो उस 'भ्रष्ट' अतिरिक्त जज की सेवा स्थायी नहीं की जाती। मगर तब कटजू की प्राथमिकता अपनी प्रोन्नति रही होगी और वे कॉलेजियम को नाराज नहीं कर सकते थे।

अवकाशग्रहण के तीन वर्ष बाद तक भी वे खामोश रहे क्योंकि सरकार ने उन्हें भारतीय प्रेस परिषद का अध्यक्ष बनाया। यह भी कतथ्य है कि इस पद के लिए उच्चतम न्यायालय के कानून पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति सरिपुरकर का नाम लगभग तय हो चुका था, लेकिन अंतिम क्षणों में नाम बदला गया। अगर यूपी सरकार वापस आ जाती तो क्या कटजू यह खुलासा करते? वलियम ब्लेकने लिखा है, 'ट्रुथ टोल्ड वदि बैड इंटेट, बीट्स ऑल द लायज दैट यू वैन इंवेण्ट' अर्थात बुरी नीयत से बोला गया सत्य उन सभी झूठों से बुरा है जो आप सोच सकते हैं। सत्य अवश्य बोला जाना चाहिए। लेकिन अच्छी नीयत से।

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- <https://www.facebook.com/Jansatta>

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- <https://twitter.com/Jansatta>